"बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप"

"Nature of Education in childhood"

परिचय ! — इस अवस्था में बालक विद्यालय में जाने लगता है और उसे नवीन अनुभव प्राप्त होते हैं। औपचारिक व अनौपचारिक शैक्षिक प्रक्रिया के मध्य उसका विकास होता है।

बाल्यावस्था शैक्षिक दृष्टि से बालक के निर्माण की अवस्था है। इस अवस्था में बालक अपना समूह अलग बनाने लगते हैं। इसे चुस्ती की आयु कहते हैं। इस अवस्था में शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार होता है।

ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन ने लिखा है। → " बाल्यावस्था वह समय है, जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोणों मूल्यों और आदर्शों का बहुत सीमा तक निर्माण होता है।" अतः उसकी शिक्षा का स्वरूप निश्चित करते समय उन्हें निम्नांकित बातों को ध्यान रखना चाहिए —

1— भाषा के ज्ञान पर बल — Emphasis on the Knowl-dge of Lanuage

1— स्ट्रैंग (Strang) के अनुसार — " इस अवस्था में बालकों की भाषा में बहुत रुचि होती है। अतः इस बात पर बल दिया जाना आवश्यक है कि बालक भाषा का अधिक — अधिक ज्ञान प्राप्त करे।

(2) जिज्ञासा की सन्तुष्टि (Satisfaction of Curiasity

बालक में जिज्ञासा की सन्तुष्टि करनी चाहिए।

(3) संचय — प्रवृति को प्रोत्साहन ! (Acquisitiveness
संग्रह करने की प्रवृति !

इस अवस्था में संचय करने की प्रवृति होती है। वह जिस वस्तु को देखकर उसे अच्छी लगे वह उसे संचय कर लेता है। माता-पिता व शिक्षक का कर्तव्य है कि वह उसे शिक्षाप्रद वस्तुओं को दें।

4- क्रिया व खेल द्वारा शिक्षा ⇒ (Edu. throug. Activity and play) बालक मे सीखने की प्रवृत्ति विकसित (Self Activity) स्वयं क्रिया द्वारा करनी चाहिए। (doing by learning) करके सीखना।

(5) प्रेम व सहानुभूति पर आधारित शिक्षा ⇒ Edu. Based on Love and Sympathy) इस अवस्था मे बालक को स्वतन्त्र अनुशासन देना चाहिए। वह उपदेश नहीं सुनना चाहता है। वह धमकियों से नहीं डरता। इसलिए उसे शिक्षा प्रेम व सहानुभूति पर आधारित

(6) संवेगों के प्रदर्शन का अवसर ⇒ Excursion and Exposition of Emotions) बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल कहा जाता है। संवेगात्मक विकास का A unique stage in emotional development Cole & Bruce — कोल एवं ब्रूस

(7) सामाजिक गुणों का विकास ⇒ Dev. of Social Qualities) किलपैट्रिक ने बाल्यावस्था को "प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण (Competitive Socializations) का काल माना है इसलिए स्कूल / कालेज मे ऐसी क्रियाओं को करना चाहिए जो जैसे - अनुशासन, आत्म नियन्त्रण, प्रतिस्पर्धा, सहयोग इत्यादि इस से सामाजिक गुण आते है।

(8) रोचक विषय सामग्री — (Interesting Contents) बालकों की रुचियों मे परिवर्तनशीलता होती है।

(9) उपयुक्त विषयों का चुनाव — Selections of Subject उन विषयों को चुना जाए जो उसकी पूर्ति कर सके जैसे - भाषा, अंकगणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, ड्राइंग चित्रकला, सुलेख, पत्र लेखन, निबन्ध रचना। इत्यादि

(10) रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था — (Arrangment of Creative Work) बालकों की रचनात्मक कार्यों मे रुचि होती है। अत विद्यालयों मे रचनात्मक कार्य कराने चाहिए।

(11) पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था ! – Co-Curricular Activities) बालक की विभिन्न मानसिक रुचियों को सन्तुष्ट करके उसकी सुप्त शक्तियों का अधिकतम विकास किया जा सकता है। कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यालय में अधिक-से-अधिक पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं संचालन किया जाना चाहिए।

(12) पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था – Excursions & Scouting) लगभग 9 वर्ष की आयु बालक में निरुद्देश्य इधर उधर घूमन की प्रवृत्ति होती है। उसकी इस प्रवृत्ति को सन्तुष्ट करने के लिए पर्यटन और स्काउटिंग को उसकी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

(13) नैतिक शिक्षा ! – (Moral Education)

पियाजे (Piaget) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि लगभग 8 वर्ष का बालक अपने नैतिक मूल्यों का निर्माण और समाज के नैतिक नियमों में विश्वास करने लगता है।

(14) पाठ्य-विषय व शिक्षण-विधि में परिवर्तन ! –

Change in Curriculum and Method Teaching)

इस अवस्था में बालक की रुचियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। अतः पाठ्य-विषय शिक्षण-विधि में उसकी रुचियों के अनुसार परिवर्तन किया जाना आवश्यक है। ऐसा न करने से उसमें शिक्षण के प्रति कोई आकर्षण नहीं रह जाता है। फलस्वरूप उसकी मानसिक प्रगति रुक जाती है आदि।

"बाल्यावस्था को प्रभावित करने वाले कारक"

"Factors Affecting Childhood"

बाल्यावस्था को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक है — जैसे —

(1) परिवार सम्बन्धी (Family Factors)

1) भाषा का विकास (Language Development)
2) खेल का विकास (Development of Play)
3) मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)
4) सृजनात्मकता का विकास (Development of Creativity)
5) आदतो का विकास (Development of Habits)
6) सामाजिक विकास (Social Development)
7) संवेगात्मक विकास (Emotional Development)
8) मानसिक विकास (Mental Dev.)
9) गामक विकास (Motor Dev.)
10) शारीरिक विकास (Physical Dev.)
11) सांस्कृतिक हस्तान्तरण (Cultural Dev.)
12) नैतिक विकास (Moral Development)
13) वात्सल्य और संरक्षण (Love & Security)

(1) भाषा का विकास

पारिवारिक सम्बन्ध जैसे होंगे बालक वैसी ही भाषा सीखता है परिवार मे शिष्टाचार है तो बालक मे भी शिष्टाचार होगा।

(2) खेल का विकास

खेल के विकास मे माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जैसे साधन होंगे वैसा खेल का विकास होगा।

(3) मानसिक स्वास्थ्य

परिवार बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर बहुमुखी प्रभाव डालता है यदि परिवार मे अलगाव की भावना है तो बालक मे भी अलगाव की भावना विकसित होगी।

(4) सृजनात्मकता का विकास

परिवार द्वारा यदि बालक में स्वास्थ्य सामाजिक अभिवृत्तियों का संचार किया जाता है तो बालक की सृजनात्मकता शक्ति का विकास होता है।
उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि बालक के विकास में परिवार की भूमिका स्पष्ट होती है। परिवार से सम्बन्धित निम्नलिखित कारक ही बालकों के विकास में परिवार की सबसे अहम भूमिका होती है

1 – परिवार में निवास स्थान
2 – परिवार के सदस्यों का व्यवहार, आचरण और भाषा।
3 – परिवार के सदस्यों की शैक्षिक पृष्ठभूमि।
4 – परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति।
5 – परिवार का आकार।
6 – परिवार के नैतिक आदर्श और मूल्य।
7 – माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों का बालक के साथ व्यवहार व अनुक्रिया।
(8) परिवार का आन्तरिक वातावरण
(9) परिवार में बालकों के लालन-पोषण का तरीका।

बढ़ा सकता है व घटा सकता है। कठोर नियन्त्रण से बच्चा अन्तर्मुखी व दब्बू बन जाता है। पक्षपाती माता पिता की संतान ईर्ष्यालु होती है।

(8) मानसिक विकास

परिवार के वातावरण का बालक के मानसिक विकास से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है कुप्पुस्वामी के अनुसार — "एक अच्छा परिवार, जिसमें माता-पिता में अच्छे सम्बन्ध होते हैं जिसमें वे अपने बच्चों की रुचियों व आवश्यकताओं को समझते हैं एवं जिसमें आनन्द और स्वतंत्रता का वातावरण होता है प्रत्येक सदस्य के मानसिक विकास में अत्यधिक योगदान देता।" माता-पिता की शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का बच्चे की मानसिक योग्यता से निश्चित रूप से सम्बन्ध होता है।

(9) गामक विकास (Motor Dev.)

बालक के गामक विकास में माता-पिता और परिवार के सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक के खान-पान तथा आहार उसके गामक विकास को प्रभावित करते हैं। व्यायाम, खेलकूद और मालिश का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। टीकाकरण कराना भी।

(10) शारीरिक विकास Physical Dev.

परिवार यदि बालक के लालन-पालन की व्यवस्था ऐसे स्थान पर करता है जहाँ शुद्ध वायु, पर्याप्त धूप, प्रकाश, स्वच्छता की समस्या न हो तो बालक का शारीरिक स्वास्थ्य रहता है पौष्टिक और सन्तुलित आहार उपलब्ध कराकर, नियमित दिनचर्या, बिताने की आदत डालकर, थकान दूर करने के लिये विश्राम और निद्रा।

(11) सांस्कृतिक हस्तान्तरण

बालक में सांस्कृतिक हस्तान्तरण माता-पिता व शिक्षक द्वारा अच्छे संस्कार होना चाहिए। वंशानुक्रम व वातावरण अगर ठीक है तो संस्कार भी ठीक होंगे।

(12) नैतिक विकास

बालक में नैतिक विकास माता पिता के व सामाजिक विकास के द्वारा नैतिक विकास होता है जैसे — पैर छूना, बड़ों की इज्जत करना

(13) वात्सल्य और संरक्षण

मातृ-वात्सल्य और पैतृक संरक्षण बालक को परिवार में ही प्राप्त होता है